

Origin of the State - Historical (Evolutionary) theory.
 राज्य की उत्पत्ति - ऐतिहासिक (विकासवादी) सिद्धान्त —

(राज्य की उत्पत्ति के निम्नलिखित सिद्धान्तों में ऐतिहासिक (विकासवादी) सिद्धान्त बहुत ही महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय सिद्धान्त रहा है। ऐतिहासिक सिद्धान्त राज्य की अन्तर्गत मानव संस्थाओं की जाति ऐतिहासिक विकास का परिणाम मानता है। यह सिद्धान्त राज्य की न तो देवी संरचना में बल्कि प्रभुत्व का परिणाम और न ही एक ऐसा साधन मानता है। इस मनुष्यों के आपस में समझौता (कैबल) बना होता है, वास्तव में राज्य मनुष्यों के सामाजिक जीवन के क्रमिक विकास का स्वाभाविक परिणाम है। मनुष्यों ने (राज्य) का निर्माण नहीं किया बल्कि उसके अपने सामाजिक जीवन के संघर्ष करने की प्रक्रिया में चले-चले संघर्ष के माध्यम से विभिन्न रूप विकसित हुए, उन्हीं में से राज्य अपने-आप विकसित हुआ है।

इस सिद्धान्त को मानना ही कि राज्य की उत्पत्ति के किसी विशेष समय का पता नहीं लगाया जा सकता है और न किसी विशेष कारण का मूल (राज्य) विनिर्माण करने के अभाव में वर्तमान रूप में विकसित हुआ है। राज्य की उत्पत्ति के ऐतिहासिक सिद्धान्त के संख्य में उदारवादी एवं मार्क्सवादी विचारकों ने निम्नलिखित विचार व्यक्त किए हैं। उदारवादी दार्शनिक के सिद्धांत आर. एम. मैक्डवेल (R.M. Macdowell) को मानना है कि आधुनिक राज्य अनेक उदार-युद्धों के बाद प्रथम द्वितीय सचिव के उपरान्त के रूप में विकसित हुआ है। किन्तु विपरीत मार्क्सवादी दार्शनिक के समर्थक एंगेल्स को मानना है कि राज्य की उत्पत्ति और विकास समाज में व्यवस्था और नियंत्रण वर्गों की उत्पत्ति और विकास के साथ जुड़ा है। और पिछली एक ऐतिहासिक अवस्थाओं की तरह आधुनिक राज्य का संघर्ष भी वर्ग-संघर्ष (class struggle) पर आधारित है।

(15) के विकास में सहायक तत्व:— (15) के विकास में जो तत्व सहायक रहे हैं उनका ~~विशेष~~ उल्लेख निम्न प्रश्न से किया जा सकता है—

1. मूल सामाजिक प्रवृत्ति (Natural Social Instincts):— (15) के विकास में सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्व मनुष्य में पाई जाने वाली मूल सामाजिक प्रवृत्ति है। जब मनुष्य साथ-साथ रहने लगे तो सामाजिक जीवन की ऐसी अनेक परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई कि उनके समाधान के साधन के रूप में (15) का उदय प्रकाश में आया। प्राचीन में मनुष्य का जीवन प्रलय क्षण के बाद राजा के रूप में चल रहा। किंतु बाद में मनुष्य के जीवन में जैसे-जैसे जातेजाते काफी गहरे-गहरे (15) के संगठन में भी जातेजाते काफी गहरे और इसका रूप व्यापक होता गया।

2. मूल संबंध (Kinship):— यह सर्वमान्य है कि एकता का प्राचीनतम रूप संबंध से उत्पन्न हुआ, यही संबंध ने ही जातियों और कुलों की एकता के संबंध में बांधा और उन्हें संगठन तथा दृढ़ता प्रदान की। इस मूल संबंध की प्राचीन इकाई कुटुम्ब था। मेकाव के अनुसार—“मूल संबंध समाज का जन्म देता है और कलान्तर में समाज यज्ञों कागो चलकर कुटुम्ब बूत बन जाते हैं प्रचार के प्रचारों ने सामान्यता की रूप में छिपा और कि आधुनिक समाज आसिद्ध में आया जिसमें (15) के विकास का काम”

3. धर्म (Religion):— धर्म सदैव ही सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण तत्व रहा है। धर्म ने (15) के चेतना के आगमन में योग दिया है। अतः (15) की उत्पत्ति में भी धर्म सहायक रहा है। यह यह उल्लेखनीय है कि संगठन और एकता के लिए धर्म का बहुत बड़ा योगदान रहा है। धर्म ने मनुष्य को अनुशासन तथा भद्रा पालन काई सिखाया है। धर्म और (15) के बीच में एक समझ काई मेहनत है। आज भी कहीं-कहीं धर्म का राजनीति से घनिष्ठ संबंध है इस प्रकार हम देखते हैं कि धर्म एक महत्वपूर्ण तत्व है जिसने (15) के विकास में योगदान दिया है।

4. आर्से (force):— आर्से की एकता का प्रचार लक्ष्य रहा है और वह आ मनुष्यों की एकता के प्रति में बांधनी रही है। (अपने प्राथमिक विकास में आर्से ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है) मुझ विचार और आर्से पालन के फलस्वरूप कुटुम्ब जाति में जाते कबीलों में तथा (अपने अपने प्रचारण करने रहे, इस प्रकार सर्वत्र मुझ विचार एवं आर्से ने सभी के लक्ष्य रहे हैं, आर्से दो समूहों की एकता में बाँधने में सफल होती है तथा आर्से पर आधारित राजनीतिक अथवा आर्थिक आधिकार एवं प्रभुत्व की बड़ा (अपने विकास का कारण बनती है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि आर्से में व्युत्पन्न के लक्ष्य आर्से से हिंसा का प्राकृतिक हो जाना है तथापि आर्से की (अपने विकास में सफल होती है।

5. आर्थिक गतिविधियाँ (Economic Activities):— (अपने उत्पत्ति और विकास में मनुष्य की आर्थिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है। इस संबंध में जॉन्स ने कहा है कि "आर्थिक बड़ाई जिन्हें द्वारा मनुष्य ने मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति की तथा बाढ़ में चरने कुछ समय हुआ, राज्य के निर्माण में आवश्यक लक्ष्य-ही है।" ~~लेकिन~~ लेगे, मंडियावेली, हॉल्स, लौरे, एम। मिथ, माउटेल्स आदि विचारकों ने भी यह स्वीकार किया है कि राज्य की उत्पत्ति और उसके विकास में आर्थिक लक्ष्यों का बड़ा महत्वपूर्ण सहयोग रहा है। आधुनिक युग में कार्ल मार्क्स ने (अपने उत्पत्ति एवं उसके विकास के संबंध में आर्थिक परिस्थितियों एवं गतिविधियों के योग को बहुत महत्वपूर्ण माना है।" और कहा है कि राज्य आर्थिक परिस्थिति से ही आयेला है इस प्रकार आर्थिक विकास की गतिविधियों के अनुसार मनुष्यों के सामाजिक एवं राजनीतिक संगठन में परिवर्तन होते रहे हैं और यह स्पष्ट है कि (अपने विकास पर ~~आर्से~~ आर्थिक गतिविधियों का प्रभाव गैरनिवार्य है।

6. राजनैतिक चेतना (political consciousness):— (राजनैतिक चेतना) राजा के विकास में योगदान देने वाले तत्वों में से एक महत्वपूर्ण तत्व है। राजनैतिक चेतना का वास्तविक उद्देश्य उन उद्देश्यों के प्रति जागरूकता से है जिनकी प्राप्ति के लिए राजनैतिक संगठन द्वारा होती है। राजनैतिक चेतना मनुष्य को राजा के रूप में संगठित करती है जैसे-जैसे प्रजाता का विकास हुआ कान्तरिक सुझावाही का क्रमण से राजा का उद्देश्य की आवश्यकता को देखते हैं राजनैतिक चेतना को और भी स्पष्ट कर दिया आसन अनुभासित तथा युद्ध आदि के लिए अब राजनैतिक संगठन की आवश्यकता और भी स्पष्ट हो गई साथ ही साथ युद्ध व्याप्तियों में आतंक की काँकड़ा भी बढ़ी और सैनिक अभिवाहीयों द्वारा वे आतंक की ~~प्राप्ति~~ प्राप्ति करने लगे। युद्ध में विजयी नैवा राजा हो गया उनके विरोधाधीन। बने लगा और उनके प्रभुत्व अन्तर्गत लगाई गई प्रजा सभा और काँग्रेस का जन्म हुआ और राज्य सूर्य रूप में सामने आ गया।

स्पष्टतः राजा के विकासवादी सिद्धान्त के उपर्युक्त वर्णन के बाद हम इस ~~सिद्धान्त~~ सिद्धांत पर पहुँचते हैं कि राज्य इन तत्वों द्वारा विकसित हुआ है। राज्य से पूर्व परिवार थे जो राज्य के दोरे रूप में चर्म ने उन्हें एकता की ओर राजनैतिक एकता और चेतना ने राज्य के रूप में स्पष्ट किया। राज्य की उत्पत्ति के संबंध में विकासवादी सिद्धान्त के द्वारा यह प्रतिपादित किया गया है और यही सर्वमान्य है।